मौन ही मौन

सच आन्टी मैंने अपनी आँखों से देखा है। अगर जूठ बोलूँ तो मुँह में कीड़े पड़े- शुभा ने पहले मिसेस शुक्ला को देखा और फिर एक दृष्टि उनके बेटे राहुल पर डाली।

जाहिर है - कीड़े ही पडेंगे। वह मुँह में बुदबुदाया...चुप रह - मिसेज शुक्ला ने बेटे को घूरते हुए लताड़ा। और फिर प्यार से शुभा की ओर देखा...ये तो बता बेटी क्या आयु होगी लड़के की।

"यही कोई पच्चीस-तीस वर्ष। सुन्दर, सजीला नौजवान है" - वह मजे ले लेकर बताने लगी।

"तो ये कहो कि तुम्हारी लार टपकने लगी है। यही तुम औरतों की ताकने झांकने की बुरी आदत है। कोई किसी के घर में आता जाता है तो तुम्हारा क्या जाता है।

राहुल अपने अक्खड़पन पर उतर आया। उस समय उसकी मम्मी चश्में से उसे घूर-घूर कर देख रहीं थीं।

"और, और तुम तो धनी माता-पिता की औलाद हो... बुराई करने में भी एक नम्बर हो।"

"मेरे पास पैसों की कमी नहीं है - राहुल साहेब। मेरी हॉ बीज उसी तरह हैं जैसे पहले थी" - उसने झंझलाहट से कहा - "डॅ डी ने भाई साहेब के अमरीका जाने के बाद मेरे पॉकेट मनी और बढ़ा दी है।

वह गुस्से से पैर पटकती हुई चली गी - अरे बेटा - कोई लड़कियों से ऐसी बातें करता है - मम्मी आप उसें मना क्यों नहीं करती हैं। वह घंटो यहाँ आप से उल्टी-सीधी बातें करती रहती है।

मिसेज शुक्ला तपाक से बोली - "बेटा यह शरीफों का मुहल्ला है -

रहने दीजिए मम्मी। खूब जानता हूँ, यहाँ की शराफत को। यहाँ चोरी छिपे स्मगलिंग होती है। दरवाजे बन्द करके जुआं खेला जाता है, शराब पर शराब पी जाती है। बड़े लोगों की बातों पर पर्दा डाल दिया जाता है और मामूली लोगों की छोटी-सी बात को भी उछाला जाता है। उस घर में आने वाला नौजवान पति या भाई भी हो सकता है।

अरे भैया! तुम्हारा विचार तो सबसे निराला है। मिसेज

शुक्ला ने बेटे की ओर तेज नजरों से देखा - क्या पति रात के अंधेरे में घर आते हैं। जब वह आते हैं तो घर की तमाम बत्तियाँ बुझा दी जाती हैं..

अरे, उस घर में अंधेरे में क्या-क्या होता है - भगवान जाने। शुभा कहती है कि वह ग्यारह-बारह बजे के करीब आता है।

राहुल उत्तेजित होकर बोला - "मैं कहता हूँ आप इस लड़की का आना जाना बन्द कीजिए इस घर में।"

तुम चुप रहो - राहुल, तुम्हारी सलाह की जरूरत नहीं है। ये नये किरायेदार तो पहले दिन मुझे ठीक लगे थे, कैसे घबराये हुए थे - बाप, बेटी। लेकिन बाद में किसी से न मिलना न जुलना। अरे - बाई तो बताती है कि जिस दिन वह लड़का आता है, पिता दिन भर रोता रहता है। और वह सुबह नाश्ता भी नहीं करता है। लगता है कि बेटी की गलत हरकत उसे पसन्द नहीं। उसकी सूरत पर भोलापन तो नाम को भी नहीं है, फटकार बरसती है। कलयुग है....कलयुग है।

मम्मी उसकी सूरत पर तो गज़ब का भोलापन है। ऐसा भोलापन तो मुहल्ले की किसी लड़की में नहीं है। राहुल ने व्यंग्य से कहा -

क्या तुमने उसे देखा है - एकाएक वह बोल उठीं। वह उस पीली कोठी को देखने लगीं, जो नए किरायेदार के कारण पूरे मुहल्ले में चर्चा का विषय बनी हुई थी। वह सोचने लगीं, कहीं मेरा बेटा तो नहीं जाता है?

पूरे मुहल्ले में वह कोठी रहस्यमय कोठी बन गयी। वह रहस्य था - रात के धुंधलके में कौन नौजवान आता है। उस कोठी में क्या-क्या कुकर्म होते हैं - यही प्रश्न प्रत्येक औरत के मनोमस्तिष्क पर छाया हुआ था। सबसे ज्यादा परेशान मिसेज़ शुक्ला थीं। मिसेज पाठक के पेट का बारीपन खुद उन्हें यही तकलीफ देने लगा तो बेचारी सहन न कर पाई। रहीं मिसेज खान तो वह ये सब मुहल्ले की अच्छाई के लिए कर रहीं थीं। उनका कहना था कि इन दिनों नए किरायेदारों ने मान-सम्मान को बेच दिया है। अपने साथ मिसेज शुक्ला को साथ चलने के लिए राजी करने से पहले उन्हें यह महसूस हुआ कि यही आग तो इधर भी भड़क रही है।

इतवार की छुट्टी का सभी, बेसब्री से इन्तिजार करने लगीं मानो कोई मोर्चा जीतना हो। सुबह जल्दी-जल्दी सब काम निपटाकर, बच्चों को पतियों को सौंपकरके सभी महिलाएँ उस घर की ओर चली दीं।

दरवाजा खोला एक साठ साल के व्यक्ति ने, जिसके मुखमंडल पर तेज ही तेज था।

अरे! आप लोग है - आइए, बैठिए...सामने से आती हुई लड़की ने उन औरतों को देखते हुए जबरदस्ती की मुस्कराहट मुख पर सजायी और सोफे पर एक तरफ बैठ गई। अभी वह सम्भल भी नीहं पायी थी कि प्रश्नों की बौछार उस पर होने लगी।

मिसेस शुक्ला से न रहा गया, वह पूछने लगीं - "तुम पहले कहाँ रहती थी?" दुसरा प्रश्न बन्दूक की गोली की तरह दगा औमती खान ने - वह घर क्यों छोडा?

"लोकल कालोनी में"...वह सब को चाय देती हुई, घबराई - सी बोली -

बेटी, इधर आना - इस आवज पर वह जाने के लिए मुड़ी ही थी कि श्रीमतियों की टीका-टिप्पणी सुरू हो गई -

"देखो, कैसी घबराई हुई है" - अरे, ऐसे आने जाने वाले एक हैं या बहुत से...

उसे धीरे-धीरे आता देखकर वे सब खमोश हो गयीं। "हलवा लीजिए" मिसेस शुक्ला से कहा उसने... मैंने खाया है, बीबी। बहुत स्वादिष्ठ है। ये बिस्किुट भी लगता है घर के ही बने हुई हैं - वह बिस्किटों से ज्यादा उसको ताड़ रहीं थीं।

"जी हाँ - बाबू जी को मीठी चीज़े बहुत पसन्द हैं लेकिन घर की। हर चीज में सफाई पसंद हैं।"

"कल रात तुम्हारे घर कौन आया था?" औमती पाठक ने कड़ी निगाहों से लड़की को देखते हुए पूछा.... अरे! कल..कल रात को तो कोई नहीं आया था। वह थूंक निगलती हुई बोली...

"हमने कल रात एक जवान लड़के को तुम्हारे घर से निकलते हुए देखा था।"

"बाबू जी हैंगे।" वह भोजन करके बाहर टहलने जाते हैं। उसके चेहरे का सफेद रंग देखकर सबकी आँखें बोल उठीं...।

नहीं वह तो नौजवान था। हम लोगों ने अपनी

आँखों से देखा था...बाबू जी तो बूढ़े हैं..सब एक साथ बोल उठीं।

उनके प्रहार से वह घबरा गई और बोली की पड़ोस में आया होगा।

शक भरी निगाहों से लड़की को तौला जाने लगा। इसी बीच श्रीमती त्रिपाठी ने पूछा - तुम्हारा नाम क्या है?

उत्तर मिला - "शुद्धी"....

व्यंग्य से सभी कहा - तुम्हारा नाम बहुत सोचसमझकर रखा गया है...

सभी औमतियाँ अपने-अपने घर की ओर चल दी। घर आकर मिसेज़ शुक्ला बड़बड़ाने लगीं....'कुछ न कुछ बात तो जरूर हैं....

एक तो आप शक बहुत करती हैं मम्मी। वह बात काटकर कुछ और कहना चाहते थे कि मिसेज़ शुक्ला नर्म पड़ गयीं।

अपने राज़ पर पर्दा डालने के लिए उन्होंने तो नौकरानी भी निकाल दी है....वह फिर बेटे से बोली .... नौकरानी को तो आप भी निकाल दीजिए, मम्मी। अच्छी औरत नहीं है। मुझे तो लगता है, सारी लगाई बुझाई इसी औरत की है।

मैं, तुम्हें खूब समझ रही हूँ।

न जाने आप लोग उस घर के पीछे क्यों पड़ गई हैं - उत्तेजित होते हुए राहुल ने कहा।

फिर अपने इकलौते बेटे को तैयार होकर बाहर निकलता देखकर झट दरवाज़े की तरफ भागी।

मिसेस शुक्ला बेटे के इस व्यवहार से विचलित हो उठीं।....

शोक व्यक्त करने आयी श्रीमती पाठक को देखकर वह तड़प गयी। उसने उनका हाथ थामते हुए कहा - "यही हैं वह नौजवान आन्टी। जो मुझसे और बाबू जी से रात के अंधेरों में मिलने आता था। और उसने लाश पर से चादर उठा दी और चीखने लगी

"यही है मैरा भाई"...जिसके आने से पूरा मुहल्ला परेशान हो जाता था, खोजबीन करने लगता था, टीका-टिप्पणी करने लगता था।

सब की ओर देखकर वह बोली - आन्टी जी मेरा भाई फर्स्ट क्लास एम.ए. था। नौकरी की तलाश में कहाँ-कहाँ नहीं भटका। उसे एक जगह नौकरी मिली, लेकिन वह तो देश के गद्दार निकले। वह अपने भाई की लाश को थामते हुए बोली - "जब मेरे निखी भाई को पता चला कि वह उसके द्वारा देश को बर्बाद करवाना चाहतें है तो मेरे भाई ने लाखों के बदले भी यह सौदा स्वीकार न किया और वहां से भाग निकला। वह लोग उसके खून के प्यासे हो गए। मेरा भाई छुपता-छुपता रहा और वे साये की तरह उसके पीछे लगे रहे। हमने इन्हीं दरिन्दों के वजह से अपना घर छोड़ दिया" - यह कहते हुए वह बेहोश हो गई।

बेटे की लाश के सामने सिर झुकाएँ बूढ़े पिता ने कहा - "बहन। इसे समझा दे कि शहीदों के लिए आँसू नहीं बहाते। जो जीवन किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए अर्पित किया जाता है उसका शोक नहीं मनाया जाता। इसने अपने देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया।"

राहुल के साथ मुहल्ले के तीन-चार और लड़के भी थे जो उसके अन्तिम संस्कार में सहायता देने के लिए खड़े थे -

बाबू जी! राहुल ने शोकाकुल आवाज़ में कहा.... मेरे भाई को न ले जाए। मैं और मेरे बाबू जी निखी के बिना नहीं रह सकते....शुद्धी रोती हुई बोली...

"धीरज रखो, बहन" - राहुल ने शुद्धी के सिर पर हाथ रखा - आपका भाई तो अमर हो गया है। वह अपने अच्छे कर्मों के लिए सदैव याद किया जाता रहेगा.....

बाप-बेटी दोनों ही रो रहे थे, राहुल और उसके मित्र दोनों को आश्वासन दे रहे थें।

और आश्चर्य घोर आश्चर्य था। वह सब मौन थी। वे जब से आयीं थीं, मौन ही मौन थीं।

* * *